MAA OMWATI DEGREE COLLEGE,HASSANPUR (PALWAL)

Class:- B.A 4th Sem (MC)

Subject:- HISTORY - History of Ancient World (MC)

B.A IVth Sem History
(NEP) 2026

Date:
Page:

प्रश्न- 1 नवपाषाण काल से आप क्या जानते है। नवपाषाण काल की विशेषताओं का वर्णन कीजिए!

उत्तर नवपाषाण काल को मनुष्य के जीवन का सबसे क्रांतिकारी काल कहा जाता है। विद्वानो ने इसका काल को 10000ईपूतक 4000 ई० पू० तक बताया है। इस काल में मनुष्य ने कृषि तथा पशुपालन करने सीख लिया था। अब उसके भटकने के दिन समाप्त हो गए थे। और वह शिकार का संग्रहण से स्वयं भोजन उत्पादक बन गया।
वे जंगल से खाद्यान्न बीज ढूंढ निकाले और उन्हे फसलो के तौर पर अपने खेतो मे उगाना आरम्भ कर दिया। अग्नि के प्रयोग से भोजन को भी आग में पका कर खाने लगा। पहिले के अविष्कार से जीवन में सरलता आने लगी।
इस काल में पत्थर के काल ही तेज धार वाले उपकरण बनाता था। वह चाक में मिट्टी के वर्तन भी बनाने लगा। एक स्थान से दुसरे स्थान पर जाने के लिए बैलगाडियो बना ली। कि प्रो गार्डन चाइल्ड ने नवपाषाण काल को नवपाषाणिक क्रांति का नाम दिया है।

Scanned with OKEN Scanner

* नवपाषाण काल की विशेषताएं -

i) मनुष्य खाद्य उत्पादक के रूप में -

नवपाषाण काल मनुष्य के जीवन का बहुत महत्व-पूर्ण काल था। इस काल में उसने खोजें की अब उसके जीवन में सरलता आने लगी थी। इस काल में मनुष्य की प्रमुख उपलब्धियां खाद्य उत्पादन का आरम्भ पशुओं के उपयोग की जानकारी और ग्राम्य जीवन का विकास मानी जाती है। सबसे पहले मुरुष्य ने कृषि करना सीख। नई कृषि जीवन - पद्धति का महत्वपूर्ण परिणाम था। जनसख्या में वृद्धि।

ii) कृषि का आरम्भ -

नवपाषाण काल में मनुष्य ने कृषि करनी आरम्भ की अनुमान लगाना कठिन है कि मनुष्य ने कृषि का आरम्भ कैसे किया। ऐसा माना जाता है कि जब जलवायु में घोर परिवर्तन हो रहे थे तो जंगल समतल भूमि में परिवर्तन होने लगे। अब मनुष्य ने घास और फलों के बीज इकट्ठे करने आरम्भ किया।

3) **पशु - पालन** - नव पाषाण काल में कृषि के साथ - साथ मनुष्य के द्वारा पशु - पालन भी आवश्यक हो गया। इतिहासकारों का मानना है कि मनुष्य ने सबसे कुत्ते की उपयोगिता को समझते हुए इसे पालना आरम्भ किया कुत्ते की सहायता से मनुष्य शिकार करता है।

4) **निवास स्थान** - नवपाषाण काल में कृषि के आरम्भ हो जाने से मनुष्य के इधर - उधर भटकने के दिन समाप्त हो गए। अब उसने स्थायी रूप से एक जगह रहना आरम्भ कर दिया। वह मिट्टी तथा घास - फूस झोपड़ियां बनाकर रहने लगा।

5) **ग्राम्य जीवन का उदय** - नव पाषाण काल में मनुष्य ने बस्तियां बनाकर गांवों में निवास करना आरम्भ कर दिया था। कृषि तथा पशुपालन करने से मनुष्य की भोजन के लिए शिकार पर निर्भरता कम हो गई। अब उसने स्थाई रूप से निवास करना आरम्भ कर दिया।

Scanned with OKEN Scanner

6) खान - पान - विद्वानों के अनुसार कृषि के आरम्भ हो जाने से नव पाषाण काल मनुष्य ने अपने खेतों में अनाज उगा कर खाना आरम्भ कर दिया पूर्व पाषाण काल में वह कच्चे मांस जंगली पर निर्भर रहता था। अब उसने मांस तथा अनाज को आग में पकाकर खाना आरम्भ कर दिया। आरम्भ में अनाज को भूनकर खाता था

7) पहिये का अविष्कार - नव पाषाण काल में मनुष्य की सबसे क्रांतिकारी कदम पहिये का अविष्कार था। पहिले का अविष्कार हो जाने से वह चाक पर मिट्टी के बढ़िया प्रकार के बर्तन बनाने लगा। बर्तन बनाने के अतिरिक्त मनुष्य ने पहिये को प्रयोग बोझ ढोने के लिए किया है।

8) उद्योगों का विकास - पहियों के आविष्कार के पश्चात मनुष्य ने विभिन्न प्रकार के व्यवसायों का अपनाना आरम्भ किया दिया। चाक की सहाय से वह मिट्टी से विभिन्न प्रकार के सुंदर - सुंदर

बर्तन जैसे- घड़े, मटके, कटोरियां, तश्तरियां, गिलास आदि।

9) हथियार तथा औजार - नव पाषाण काल के अच्छे प्रकार के औजार तथा हथियार प्राप्त हुए। इस युग में पत्थर के बहुत अच्छे उपकरण बनाए जाते हैं। कृषि के कार्यों में भी वह लकड़ी और पत्थर के औजारों का प्रयोग किया जाता है। मनुष्य हल, दराँती कुल्हाड़े, हंसिया, चाकू तथा छुरे आदि।

10) निष्कर्ष - उपर्युक्त वर्णन कर के आधार पर कहा जा सकता है कि नव पाषाण काल मनुष्य के जीवन का एक क्रांतिकारी काल था। मनुष्य ने इस काल में अनेक खोजें की इन्ही खोजों के बल पर उसने रास्ते से आने वाली बाधाओं को दूर किया। जैसे - 2 समय बितता चला गया वैसे -2 ही वह अनुसंधान करता चला गया। आज भी मनुष्य प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न 2. मिस्त्र सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर - मिस्त्र सभ्यता को कांस्य युगीन सभ्यता कहा जाता है। इस काल में नगर क्रांति आई और मनुष्य ने नगरों का निवास करना आरम्भ कर दिया। मनुष्य ने कांसे के उपकरण व बर्तन बनाने आरम्भ किए जो पहले निवास करना मिस्त्र सभ्यता का उदय नील नदी की घाटी में हुआ था। "मिस्त्र वह देश है। जिसे नील नदी सींचती है। तथा इसकी पानी पीने वाले लोग मिस्त्री कहलाते है" कहकर पुकारा है। Gift of the River Nile

* भौगोलिक स्थिति - मिस्त्र अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर - पश्चिम में नदी द्वारा सिंचित एक छोटा -सा देश है। इसके उत्तर में भूमध्य सागर तथा एशिया माइनर है। दक्षिण में सूडान के जंगल, पूर्व में लाल सागर तथा अरेबिया और पश्चिम में लीबिया है। प्राचीन काल में प्राकृतिक बाधाओं से मिस्त्र सुरक्षित था।

Scanned with OKEN Scanner

Date:
Page:

* खोज - अठारहवी सदी के अंत तक सागर प्राचीन मिस्त्र की सभ्यता के विषय में अनभिज्ञ रहा और इसके विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त नही हो सकी संयोगवंश 1798 ई० मे जब "नेपोलियन बोनापार्ट" ने मिस्त्र पर आक्रमण किया। तो इस सभ्यता से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण संकेत प्राप्त हुए।

* मिस्त्र सभ्यता काकाल - मिस्त्र सभ्यता कब विकसित हुई। इस विषय पर इतिहासकारो में मतभेद है प्रसिद्ध इतिहासकारी "प्रो फ्लाइडर्स" के अनुसार मिस्त्र की सभ्यता का उदय 10,000 ई० मे हो चुका था। पुरातत्ववेत्ताओ को इस काल के मिट्टी के बर्तन तांबे की मूर्तियां तथा प्रतिदिन प्रयोग की जाने वाली वस्तुएं काफी मात्रा में मिस्त्र से मिस्त्र प्राप्त है। डा० आर० पी० त्रिपाठी के अनुसार मिस्त्र सभ्यता 3600 ई० पू० के पास -आस हुआ होगा। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी इतिहासकारो है जो मिस्त्र के निवासियो को काकेशियन तथा सेमेटिक जाति से संबंधित बताते है। विभिन्न नस्लो व जातियो के लि लोग निवास करते है

* प्राचीन युग अथवा पिरामिड युगीन मिस्त्र सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं - पिरामिड युग की विशेषताएं का वर्णन इस प्रकार है।

i) राजनीतिक जीवन - प्राचीन काल अथवा पिरामिड युग में मिस्त्र पर 6 राजवंशों के फराओं ने शासन किया था। उन्होंने विभिन्न प्रदेशों की विजय करने के अतिरिक्त लोक निर्माण कार्य करने में भी रुचि दिखलाई। मिस्त्र का राजनीतिक जीवन इस प्रकार -

ii) राजा या फराओ - प्राचीन काल में मिस्त्र के समस्त प्रशासन का मुखिया राजा या फराओ कहलाते है। सारा प्रशासन उनके ईद - गिर्द घूमता था। पिरामिड काल जोसेर हरशेपसुट, खूफू, खफ्रे पेपी द्वितीय आदि। शक्तिशाली फराओ गद्दी पर बैठे जिन्होंने मिस्त्र में उच्चकोटि की शासन व्यवस्था स्थापित की। फराओ को एक देवता होरुस का अवतार माना जाता है। इसके अलावा उसे पृथ्वी पर ईश्वर का पुत्र भी माना जाता है। इसलिए मिस्त्र की जनता फराओ को सूर्य देवता में पूजती थी।

Date:
Page:

3) प्रधानमंत्री - फराओ अपने प्रशासन को ढंग से चलाने के लिए प्रधानमंत्री की नियुक्ति करते थे। फराओ के पश्चात प्रधानमंत्री की अन्य पदाधिकारियों में प्रथम स्थान प्राप्त था। डॉ श्रीराम गोयल के अनुसार, " वह राज्य का प्रधान वास्तुकार, प्रथम न्यायाधीश और राजअभिलेख संग्रहालय का अध्यक्ष होता है। आरम्भ में प्रधानमंत्री के पद पर योग्य व्यक्तियों की भी नियुक्ति की जाती है।

4) प्रांतीय व्यवस्था - फराओ ने मिस्र के साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों बांटा हुआ था। प्रारम्भ में उन्होंने मिस्र को दो भागों उत्तरी मिस्र तथा दक्षिणी मिस्र में विभाजित किया। उन्होंने आगे समस्त मिस्र को 40 प्रांतों को विभाजित किया। समस्त प्रांतों को नोम तथा उनके मुखिया को नोमार्क कहा जाता था।

5) राजस्व प्रशासन - मिस्र में फराओ को राजस्व से बहुत आय होती है। इसलिए उन्होंने राजस्व प्रशासन को बहुत ही कुशल ढंग से संगठित किया हुआ था। राज्य की आय, धन, अन्न,

Scanned with OKEN Scanner

पशु मधु अन्य प्रकार के सामान के रूप में होती है। इन करों को सुरक्षित करने के लिए एक केन्द्रीय कोषागार की स्थापना की गई।

6) न्याय प्रबन्ध - फराओं ने प्राचीन मिस्त्र में एक कुशल या संगठित न्याय प्रणाली की स्थापना की इतिहासकारों के अनुसार प्राचीन मिस्त्र में कुल 6 न्यायालय थे। इन न्यायालयों हीता था। जिसकी नियुक्ति फराओ के द्वारा की जाती है।

7) निष्कर्ष - अंत में कहा जा सकता है कि मिस्त्र के लोगों का जीवन बहुत उच्चकोटि का था। उसके जीवन में जातीय का भेद नाम को भी कोई चीज नहीं थी। समाज में सभी बराबर थे। स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी थी। लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशुपालन था। वे प्राकृतिक देवी - देवताओं की उपासना करते थे। और वे परलोक एक जादू - टोना आदि में भी विश्वास करते थे।

प्रश्न - 3 सुमेरी लोगों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर - निम्न पर नोट लिखो -

जब विश्व की अधिकतर सभ्यताएं अन्धेरे की चादर लपेटे पड़ी हुई थी। उसी समय दजला और फरात नदियों की घाटी में एक श्रेष्ठ एवं नगरीय सभ्यता का उदय हुआ। जिसे मेसोपोटामिया की सभ्यता के नाम से जाना जाता है।

सामाजिक जीवन -

* i) समाज में तीन वर्ग - प्रचीन सुमेरियन समाज आर्थिक आधार पर तीन वर्गों में बंटा हुआ था। i) उच्च वर्ग ii) मध्य वर्ग iii) निम्न वर्ग।

सुमेरियन समाज प्रथम वर्ग उच्च वर्ग कहलाता था जिसमें राजा पुरोहित बड़े - बड़े राज्याधिकारी आते थे। इस वर्ग के लोग वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। समस्त में राजा के बाद सामाजित दृष्टि से पुरोहित का बड़ा महत्व था।

2) स्त्रियों की स्थिति - प्रचीन सुमेरियन समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी थी। वे स्वतन्त्र रूप से

कोई भी कार्य कर सकती थी। पति की मृत्यु के बाद स्त्री को दोबारा विवाह करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। स्त्री के चारित्रहीन होने पर भी इसे तलाक नही दिया जा सकता है। विवाह में दहेज पर भी उसका पूर्ण अधिकार होता था।

3) रहन सहन तथा पहनावा - सुमेर सभ्यता में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी थी। वे स्वतन्त्र रूप से भी कार्य कर सकती थी। सुमेर सभ्यता में लोगों का जीवन-स्तर बहुत ऊंचा था। उच्च वर्ग के लोग वैभवशाली जीवन व्यतीत करते थे। वे भव्य महलों में रहते थे। उसके भोजन तथा खाद्यान्न पदार्थों में भी ऐसी ही विलासिता देखने को मिलती है।

4) आभूषण शृंगार - सुमेरियन समाज में आभूषण पहनने का शौक स्त्री-पुरुष दोनों का था। खुदाई में अनेक प्रकार के आभूषण, जो नाक, कान, पैर, हाथ, गले, कमर आदि में पहने जाते थे, प्राप्त हुए हैं। उनके आभूषण, सोना, चांदी, तांबे तथा बहुमूल्य रत्नों के बने होते थे।

Scanned with OKEN Scanner

6) **मनोरंजन** - सुमेर के लोग विभिन्न प्रकार के साधनों से मनोरंजन करके अपना दिल बहलाते थे। खेल - कूद संगीत नृत्य तथा उत्सव व त्योहार उनके मनोरंजन के प्रमुख साधन थे। मन्दिर में देवदासियां भी लोगों का मनोरंजन करती थी।

आर्थिक जीवन - कृषि -

iii) प्राचीन काल में सुमेर के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। आर्मेनिया के पर्वतों से निकलकर दजला तथा फरात नदियां अपने साथ उपजाऊ मिट्टी बहाकर लाती थी। और सुमेर में इकट्ठा करती थी। इस प्रकार सुमेर की भूमि अत्यधिक उपजाऊ बन गई।

ii) **पशुपालन** - सुमेरियन लोगों का दूसरा प्रमुख व्यवसाय पशुपालन था। उस समय पशुपालन को राष्ट्रीय आय का स्रोत भी माना जाता था। पशुओं में भेड़, बकरी सुअर, बैल, गाय, गधे आदि। पशु पाले जाते हैं। पशुओं में गाय का बहुत महत्व था। सुमेर लोगों का विचार था कि गाय पशु जगत की देवी होती है।

Scanned with OKEN Scanner

Date:
Page:

IV) धार्मिक जीवन - सुमेर के लोगो को धर्म विश्वास था। उसके धार्मिक जीवन की प्रमुख विशेषताऐ इस प्रकार थी।

i) विभिन्न देवाताओ की पूजा - सुमेर के लोग विभिन्न देवा - देवाताओ की उपासना करते थे। प्रचीन सुमेर नगर - राज्यो मे अलग - अलग देवता होता है। सुमेर सुमेर वासियो ने जल की कल्पना नम्मु देवी से की जिसने पृथ्वी आकाश तथा पर्वतो की रचना की।

ii) मन्दिर तथा पुजारी वर्ग - सुमेर मे राजाओ ने बडी सख्या मे देवाताओ की उपासना के लिए मन्दिरो का निर्माण कराया। बेबीलोन के विभिन्न नगरो मे 53 अधिक मन्दिर थे। निप्पुर नगर में एनलिल तथा लगश नगर मे शमश देवता के मन्दिर सप्रुसिद्ध थे।

निष्कर्ष - सुमेर सभ्यता विश्व की प्रचीन कॉस्य युगीन सभ्यताओ अपना एक विशेष स्थान रखती है। पश्चिम में सुमरे के लोगो को सभ्यता का जनक मान जाता है। इस सभ्यता को विकास का श्रेय सुमेरियन लोगो को ही जाता है।

Date: ________
Page: ________

प्रश्न-4 यूनानियों की कला, शिक्षा और साहित्य का वर्णन कीजिए।

उत्तर- यूनानियों ने सांस्कृतिक क्षेत्र मे भी अभूतपूर्व उन्नति की यूनान के लोगो के सास्कृति जीवन को उन्नति के शिखर पर पहुचाने मे कला विज्ञान तथा शिक्षा - साहित्य का बडा योगदान था। यूनान के लोगो के सांस्कृतिक इस प्रकार थी।

i) कला - यूनानी कला का उत्थान क्रीट तथा मिस्त्र की सभ्यताओ के प्रभाव से हुए यूनानी कलाकार वस्तुओ को तराशकर उन्हे बहुत ही सुन्दर बनाने का प्रयास करते थे आरम्भ वे लकडी पर कलाकारी करते थे। परन्तु यूनान मे सफेद संगमरमर आसानी से से उपलब्ध हो जाने वे सफेद पत्थर पर चित्रकारी के कार्य करने लगे थे। तीन चरणा इस प्रकार है- आर्केइक युग (ii) हैलेनिक. युग (3) हैले-निस्टिक युग i) आर्केइक युग मे उनकी कला पारम्भिक युग मे थी।

2) वस्तु कला - यूनान मे वास्तुकला का विकास मन्दिरो के निर्माण से हुआ था। आरम्भ मे यूनानियों की कला बहुत भद्दी थी। इमारतो मे लकडी का प्रयोग अत्यधिक

Scanned with OKEN Scanner

होता था परन्तु पेरीक्लीज के काल में भवनों में सफेद संगमरमर का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में किया गया था। 6)

3) **मूर्तिकला -** लौह युग में यूनान में मूर्तिकला का भी बहुत विकास हुए। यूनान के कलाकार कांसे, लकड़ी, सफेद, पत्थर हाथी दाँत की सुन्दर मूर्तियों को सुन्दर तथा सुडौल बनाते थे। i)

iv) **चित्रकला -** यूनान में चित्रकला का विकास ज्यादा नहीं हो सका था। आरम्भ में यूनानी फूलदानों पर चित्रकारी करते थे। इसके अलावा यूनान में कलशों, सुराहियों शराबदानों हाँडियों पर भी चित्र बनाए जाते थे। प्रसिद्ध चित्रकार ड्युरिस ने हीमर की कथा तथा आइजक एवं ओडियस युद्धों का चित्रण किया है।

5) **संगीत कला -** संगीत का भी यूनान में बहुत ही विकास हुआ। यूनानी संगीत के बिना मनुष्य को अशिक्षित मानते थे। लौह काल में यूनान में समूहिक गानों का भी प्रचलन हो चुका था। ओलम्पिक खेलों में उत्सवों, मन्दिरों आदि गीत में संगीत तथा नृत्य का प्रमुख स्थान दिया जाता है। ii) (क)

b) शिक्षा तथा साहित्य - लौह कालीन के लोग यूनान में शिक्षा व साहित्य का भी बहुत विकास-

i) शिक्षा - प्राचीन काल में आरम्भ में यूनान के लोग शिक्षा पर ध्यान नही देते थे। परन्तु धीरे -2 उन्होंने शिक्षा के प्रति रुचि लेनी आरम्भ कर दी यूनान में स्कूल के लिए अलग इमारतें नही थी। शिक्षा और शिक्षको के घर तथा मन्दिरो में दिया थी। बच्चे और शिक्षको के घर शिक्षाग्रहण करने के लिए जाते हैं। दास लोगो धनाढ्य बच्चो की पुस्तको को लेकर उनके साथ जाते थे। उस समय लिखना - पढना और पुराने काव्यो को कण्ठस्थ करना और बच्चो की शिक्षा के लिए पर्याप्त समझा जाता था।

ii) साहित्य - प्राचीन यूनान में साहित्य के क्षेत्र में बहुत विकास हुआ था जो इस प्रकार -

(क) कविता - प्राचीन काल में यूनानी वीर- गाथा तथा काव्यो की रचना करते थे होमर ने इलियड तथा ओडेसी आदि महाकव्यो की रचना की। इलियड महाकाव्य में यूनानियों का ट्राय (इलियड) नामक राज्य के साथ संघर्ष का वर्णन है। इस कथा के अनुसार इलियड के राजा का पुत्र पेरीस है

Date:
Page:

iii) इतिहास - यूनान निवासियों को इतिहास लिखने का भी बड़ा शौक था। यूनानी स्कूलों में भी विद्यार्थियों को इतिहास की लिखने का भी बड़ा शौक था। यूनानी स्कूलों में भी विद्यार्थियों को इतिहास की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। हेरोडोटस यूनान प्रसिद्ध इतिहासकार था। उसको यूरोपीय इतिहास की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

4) दर्शन - लौहकालीन यूनान में दर्शनि शास्त्र की अभूतपूर्व उन्नति हुई यूनान देश में अनेक विश्व प्रसिद्ध दार्शनिकों का जन्म हुआ था। दूसरा सुकरात के बाद का दर्शन शास्त्र। यूनानी महाकवि होमर तथा हिसोइड इसी वर्णन के दर्शनशास्त्र तथा दूसरा थे।

निष्कर्ष - उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि यूनान ने प्राचीन काल में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की यूनान ने एक उच्च कोटि के समाज की स्थापना की उनका मुख्य व्यवसाय कृषि व पशुपालन था। वे व्यापार एवं वाणिज्य में रुचि लेते थे। यूनानी प्रकृतिक देवी-देवताओं की उपासना करते थे।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न 5 रोमन साम्राज्य के पतन के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर - प्रकृति का यह नियम सत्य है कि जो चीज अस्तित्व में आती है उसका पतन अवश्य होता है। रोमन साम्राज्य पर भी यह बात बिल्कुल सही बैठती है कि जिस रोम की स्थापना 753 ई० पू० में हुई तथा जुलियस सीजर तथा आगस्टस जैसे शासकों ने रोमन साम्राज्य की विशालता था।

i) **साम्राज्य की विशालता** - प्राचीन काल में रोम एक छोटा-सा नगर-राज्य था। परन्तु अति शीघ्र ही उसने विशाल साम्राज्य का रूप धारण कर लिया। रोमन साम्राज्य प्राचीन काल का सबसे विशाल साम्राज्य था। इतना विशाल साम्राज्य की जिसमें रोम के अतिरिक्त सम्पूर्ण इटली, स्पेन, फ्रांस तथा इंग्लिश चैनल के कुछ भाग थे।

ii) **रोमन सम्राटों की साम्राज्यवादी नीति** - रोमन साम्राज्य में जितने भी शासक भी गद्दी पर बैठे उन्होंने साम्राज्यवादी नीति को अपनाना सभी शासन अपनी सैनिक शक्ति के बल पर अधिक से अधिक प्रदेशों को जीतने का प्रयास करते थे। उन्होंने साम्राज्यवादी भूख को मिटाने के लिए।

Date:
Page:

3) सम्राटो का विलासी जीवन - आगस्टस तथा मारकस ओरियस जैसे शासको को छोड़कर अधिकतर समय व्यतीत करते थे। वे प्रजा की भलाई की ओर ध्यान न देकर सुरा और सुन्दरी में अपना अधिकतर समय व्यतीत करते थे। रोमन इतिहास में हमे उनकी विलासिता के अनेक उदाहरण देखने को मिलते है। सम्राट कैली एक वर्ष में 20,000,000 धन-राशि सुरा, सुन्दरी तथा आखेट आदि।

4) रोमन साम्राज्य का विभाजन - सम्राट थिओडोसियस (३४७ ई० ३९५ ई०) ने अपने शासन काल में रोमन साम्राज्य को पूर्वी रोम तथा पश्चिमी रोम दो भागो में विभाजित कर दिया। उसने यह विभाजन रोम के विशाल साम्राज्य को प्रशासनिक एवं राजनीतिक ढंग से चलाने के लिए किया था।

5) जन विद्रोह - लौह कालीन रोमन साम्राज्य में विभिन्न जातियों के लोग निवास करते थे। परन्तु उनमें राष्ट्रीयता की भावना नहीं पाई जाती है। समस्त में विभिन्न काल में जातियो के विद्रोह होते रहे। सम्राज्य रिवेरियन के समय इंग्लैण्ड तथा स्पेन के लोगो ने विद्रोह किए।

Scanned with OKEN Scanner

6) **दास प्रथा -** दास प्रथा भी साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण बनी। रोमन साम्राज्य में दास प्रथा जोरो पर प्रचलित थी। धीरे - धीरे दासो की संख्या अत्यधिक बढ गई। उन्हे अपने मालियो के आदेश मानने पडते थे। इनसे अधिक से अधिक काम लिया जाता था। तक कि दासों को रोम में सम्पत्ति की तरह खरीदा तथा बेचा जाता था।

5) **सैनिक दुर्बलता -** सेना साम्राज्य की मुख्य आधारशिला होती है। प्राचीन काल में विशाल रोमन साम्राज्य की सुरक्षा तथा सुदृढता के लिए एक संगठित विशाल सेना की आवश्यकता थी। रोम में केवल नागरिको से सैनिक सहायता ली जाती है। परन्तु लगातार युद्धो के कारण धीरे - धीरे उनकी संख्या कम होने लगी। सम्राट रात - दिन भोग - विलास में लिप्त रहते थे।

8) **रोम का आर्थिक -पतन -** इतिहासकारो का मत है कि साम्राज्य की विशालता ने रोम में आर्थिक पतन के बीज बो दिए। जर्मनी, ब्रिटेन तथा रोमन आदि देशो में फल, सब्जियाँ धातु तथा अन्य सामान भारी मात्रा में रोम के बाजारो में पहुचता था।

Scanned with OKEN Scanner

9) **सामाजिक पतन** - समस्त रोमन समाज दो वर्गों "पैट्रीशियन" तथा प्लीबियन में बंटा हुआ था। पैट्रीशियन वर्ग में कालीन लोग तथा प्लीबियन में जनसाधारण लोग आते थे। परन्तु दोनो वर्ग के लोगो में आपसी तालमेल नही थे। समाज में जनसाधारण गरीब जनता के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था।

10) **विदेशी जातियों के कारण** - जब देश में चारो तरफ अशान्ति तथा अराजकता का वातारण उत्पन्न हो रहा था। उसी समय रोमन साम्राज्य पर अनेक बर्बर जातियो ने आक्रमण कर दिए रोमन सम्राटों में इतनी शक्ति नही थी। वे देश की रक्षा कर पाते अतः गोथ, फ्रैंक, वेण्डल, तथा हूणों ने बार-बार रोम पर आक्रमण किए। 410 ई० में आलारक के नेतृत्व में गाथो ने तथा 446 ई० में हूणों ने पतन की चुपचाप बैठे देखते रहे।

निष्कर्ष - उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि जुलियस सीजर और आगस्टस के पश्चात जितने भी शासक गद्दी पर बैठे वे अयोग्य थे।

प्रश्न-6 सामंतवाद से आप क्या समझते हैं। सामंतवाद की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- मध्यकालीन यूरोप में नौवीं शताब्दी में सामंतवाद का उत्थान हुआ। रोमन साम्राज्य के पतन पश्चात यूरोप की भूमि पर बड़े-2 जमींदारों का आधिपत्य स्थापित होने लगा। सामंतवादी व्यवस्था मूलत भूमि पर ही आधारित थी। मध्यकाल में यूरोप के समाज में कृषि ही उत्पादन का प्रचलन था। जिनके अन्तर्गत उत्पादन केवल स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जाता था। इस व्यवस्था में कृषकों की भूमिका भी करते थे। सामंतवादी व्यवस्था भूमि के वितरण पर आधारित थी।

* **सामंतवाद की परिभाषा** – सामंतवाद की पूरी तरह सही परिभाषा देना बड़ा मुश्किल कार्य है। क्योंकि इसका स्वरूप यूरोप के विभिन्न देशों में अलग-अलग रहा तथा इसमें राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक तथा धार्मिक तत्व भी शामिल थे। इसके अलावा यूरोप तथा एशिया में इसका समय भी अलग - अलग रहा।

* **प्रो० डेविड** - के अनुसार "सामंत प्रणाली का विकास धीरे - धीरे हुआ था। इसकी उत्पत्ति का संबंध न किसी राजाज्ञा से था। न ही किसी एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों की प्रतिभा या कल्पना से था।

Date:
Page:

* बीच - के अनुसार, " सामंतवादी प्रथा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने से नीचे वर्ग वाले पर शोषण करने के लिए अधिकार प्राप्त था और साथ - साथ अपने से ऊपर वाले व्यक्ति से शोषित होने का भी "

* जी० वी० स्मिथ -, " सामंतवाद एक ऐसा समाज है, जहा मनुष्य केंद्रीय सत्ता के पतन के पश्चात किसी मेधावी व्यक्ति के संरक्षण में अपनी सुरक्षा हेतु संगठित हो जाते है "

* सामंतवाद की विशेषताएं - मध्यकालीन यूरोप मे सामंतवादी व्यवस्था की मुख्य विशेषताए इस प्रकार थी।

i) जागीर - जागीर सामंतवादी व्यवस्था की प्रमुख तथा महत्वपूर्ण विशेषता थी। समस्त सामंतवाद जगीर पर ही आधारित था जागीर सामंतवादी व्यवस्था की आधारशिला थी। जगीर को फीफ कहकर पुकारा जाता था। सम्राट 'होमेज उत्सव' में लार्ड अधीश्वर को जागीर प्रदान करता था। लार्ड अधीश्वर भी अपने से छोटे सामंतो (अनुचर) को भूमि अर्थात् जागीर का टुकड़ा प्रदान करते थे। प्रत्येक सामंत के पास बड़ी - बड़ी जागीरें होती थी। जागीर के छोटे - 2 खेतो मे विभाजित थी।

Scanned with OKEN Scanner

2) **मैनर -** मैनर का अर्थ था कृषि योग्य गांव की भूमि। मैनर जागीर का वह छोटा-सा भाग होता था जहाँ पर कृषक तथा दास निवास करते थे। आमतौर पर छोटे - छोटे गांवों का मैनर कहा होता था। जहाँ पर कृषक तथा दास निवास करते थें। मैनर में पांच एकड़ से लेकर पांच सौ एकड़ तक भूमि होती थी। मैनर में ऊंची पहाड़ी पर सामंत का गढ़ होता था। तथा उसके नीचे एक चर्च एक, कारखना, एक चरागाह तथा कृषक एवं दासों की झोपड़ियां होती थी। झोपड़ी के चारों ओर निजी प्रयोग के लिए कृषक की भूमि तथा साथ ही पशुओं के चरने के लिए एक बाड़ा होता था। अपनी मैनर में सामंत एक चर्च, आटे की चक्की तन्दूर तथा लोहार के लिए। एक हाट का निर्माण करा देते थे।

3) **दुर्ग या गढ़ -** सामंतवाद की एक अन्य विशेषता दुर्ग या गढ़ थी। प्रत्येक सामंत की अपनी गढ़ी दुर्ग होती है। मध्यकालीन यूरोप में गढ़िया सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए। ऊंची -2 की अपनी गढ़ी पहाड़ियों पर बनाई जाती थीं इसके चारों ओर सुरक्षित दीवार तथा खाइयाँ बनाई जाती थी। ये खाइयां हमेशा पानी तथा दलदल से भरी रहती थी। प्रत्येक गढ़ के चारों

और सैनिक चौकिया होती थी। किसी आपातकाल स्थिति में या दुर्ग का घेरा पड़ा जाने की स्थिति में सामंत तथा उनके सैनिक दुर्ग की दीवारो तथा बुर्जियो में बने सुरक्षित स्थानो पर चले जाते थे।

3) राजा तथा सामंत - राजा सामंतवादी व्यवस्था का आधार था। वह अपने साम्राज्य की समस्त भूमि का स्वामी था। वह अपने साम्राज्य की विभिन्न क्षेत्रो में बांटकर अपने विश्वासपात्र तथा शक्तिशाली लोगो में वितरित करता था। जो लार्ड अधीश्वर कहलाते थे। लार्ड भूमि के बदले राजा को सैनिक सहायता प्रदान करते थे।

निष्कर्ष- उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है। कि सामन्तवादी का स्वरूप एंव कार्यकाल विभिन्न देशो में अलग-2 रहा राजा होमेज उत्सव में सामन्तो को भूमि प्रदान करके बदले में सैनिक सेवा प्राप्त करते थे। परन्तु रोमन साम्राज्य के प्राप्त इतने शक्तिशाली हो गए थे। कि वे राजा की शक्तियो का प्रयोग करने लगे थे।

Scanned with OKEN Scanner

प्रश्न- इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर- अरब, एशिया महाद्वीप के दक्षिण - पश्चिमी भाग में स्थित है। इस देश का क्षेत्रफल लगभग बारह लाख वर्ग मील है। "लम्बाई लगभग पन्द्रह सौ मील तथा चौड़ाई लगभग तेरह सौ मील है" इसके उत्तर में सीरिया की रेगिस्तान तथा पूर्व में फारस की खाड़ी है। इसके दक्षिण में हिन्द-महासागर तथा पश्चिम में लाल सागर है। इस प्रकार यह तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है। यह प्रायद्वीप केवल तटीय भागों को छोड़कर सारा महामरुस्थल है। इस तरह से समस्त अरब रेतीले पहाड़ी तथा रेतीले मैदानों से भरपूर है।

* **इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की सामाजिक स्थिति-** इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की सामाजिक स्थिति प्रकार थी।

अज्ञानता या बर्बरता का युग- मुहम्मद साहब के जन्म से पूर्व अरब में 'जाहिलिया' अर्थात अज्ञानता और बर्बरता का युग था। अरब राजनीतिक सामाजिक आर्थिक तथा धार्मिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ था। सभ्यता तथा संस्कृति का तो दूर-दूर तक नामोनिशान नहीं था। समस्त अरबवा अज्ञानता के अन्धकार में डूबा हुआ था।

* सामाजिक विभाजन - इस्लाम के उदय से पूर्व अरब का समाज मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित था। ① बद्दू अर्थात् रेगिस्तान में खानाबदोशों का जीवन व्यतीत करने वाले तथा ② शहरी लोग जो दक्षिण अरब में निवास करते थे।

i) बद्दू - बद्दू हुमक्कड़ जाति के बर्बर तथा असभ्य लोग थे। ये लोग चरागाहों की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते-जाते रहते थे। ये अपने साथ तम्बू रखते थे। और अपने निवास-स्थान बना लेते थे। रेगिस्तान के शुष्क रेत की भाँति उनका जीवन भी अत्यन्त शुष्क था। अरब की जलवायु ने कठोर तथा बर्बर बना दिया था। वे स्वभाव से बहुत कठोर तथा खूंखार थे। दया सहनशीलता तथा प्रेम उनके उन्हें लूट लेते थे।

ii) शहरी लोग - शहरी लोग बढ़िया पक्के मकानों में निवास करते थे। उनका जीवन सुसंगठित स्थाई, शान्तिप्रिय तथा न्यायप्रिय था। उनका पहनावा, रहन-सहन, खान-पान, भी बहुत उच्चकोटि का था। वे व्यापार, वाणिज्य, कृषि तथा पशुपालन से अपना गुजर-बसर करते थे। शहरी लोग बहुत सभ्य थे।

Scanned with OKEN Scanner

Date:
Page:

ii) दास प्रथा - हजरत मुहम्मद साहब के जन्म से पूर्व अरब में अरब में दास प्रथा जोरो पर प्रचलित थी। दासो को युद्ध में बन्दी बना कर लाया जाता था। इसके अलावा दासो का व्यापार भी होता था। दासो के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। उनकी जिन्दगी तथा मौत उनके स्वामी के हाथो में होती थी।

* इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की धार्मिक स्थिति -

i) मूर्ति -पूजा - इस्लाम के उदय से पूर्व अरब की धार्मिक स्थिति अच्छी नही थी। जाहिलिया के मुस्लिम विरोधी बद्दुओ के पास धर्म नाम की कोई वस्तु नही थी। अरब निवासी बहुदेव-वादी तथा प्राकृतिक देवा - देवताओ के उपासक थी। उनमे मूर्ति - पूजा भी विश्वास नही करते थे। बद्दुओ में प्रत्येक कबीले का अपना देवता होता था। सेमेटिक लोगो का मानना था। पेड़-पौधो, गुफाओ, झरनो, तथा पत्थरो में दुष्ट आत्माएं निवास करती है।

ii) प्रकृति की पूजा - अरब के लोग प्राकृतिक देवा - देवताओ की भी उपासना करते थे। बद्दुओ के नक्षत्र चन्द्रमा पर आधारित थी वे चन्द्रमा की उपासना जोरो पर

करते थे। खेतिहर अर्थात् कृषक लोगों सूर्य की उपासना करते थे। परन्तु बद्दू सूर्य की स्वयं बद्दूसूर्य का जला डालेगा।

3) **अन्धविश्वास** – पूर्व इस्लाम अरब में विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वास प्रचलित थे। लोग भूत – प्रेत, जिन आदि में बहुत विश्वास करते थे। वे देवताओं को शुद्ध प्रकृति के तथा आत्मा को दुष्ट प्रकृति के मानते थे। अरब के लोग देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पशुओं तथा मनुष्यों की बलि चढ़ाते थे।

निष्कर्ष – निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है। इस्लाम के उदय से पूर्व की सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्थिति अच्छी नहीं थी। समाज पर बद्दुओं का बोलबाला था। वे हिंसक प्रवृत्ति के थे। वे खानाबदोश का जीवन व्यतीत करते थे। प्रकृति ने उन्हें कठोर बना दिया था। वे समय – समय पर शहरों पर आक्रमण करके वहाँ की शांति को भी भंग करते रहते थे। समाज में स्त्री की स्थिति भी अच्छी नहीं थी।

Scanned with OKEN Scanner